रोशनी की लकीरें

सम्पादक:
रमणिका गुप्ता • प्राणेश कुमार

रमणिका गुप्ता

१९३० में जन्म।

एम० ए०, बी० एड० तक शिक्षा।

पुस्तकें :

गीत-अगीत (कविता-संग्रह), अब और तब (कविता संग्रह), आम आदमी के लिए (कविता संग्रह), खूंटे कविता संग्रह), एक ही परिवेश (कविता संग्रह, अन्य पांच कवियों के साथ), राष्ट्रीय एकता और विघटन के बीज (लेख), असम नर-संहार : एक रपट (रपट), पूर्वांचल : एक कविता-यात्रा (कविता संग्रह), प्रकृति युद्धरत है (कविता संग्रह), मौत के रू-ब-रू (लम्बी कविता, शीघ्र प्रकाश्य)

सम्पादित पुस्तकें :

रोशनी की लकीरें (कविता संग्रह), समकालीन कहानियां (कहानी संग्रह)

अन्य :

प्रसिद्ध मजदूर नेता, पूर्व विधान सभा एवं विधान परिषद् की सदस्या, सी० आई० टी० यू०, बिहार की उपाध्यक्ष, अखिल भारतीय कोल वर्कर्स फेडरेशन की उपाध्यक्ष, कोलफील्ड लेबर यूनियन की महासचिव, जनवादी लेखक संघ की राष्ट्रीय परिषद् की सदस्या। भारतीय प्रतिनिधि मंडल की सदस्या और नेता के रूप में मैक्सिको, बर्लिन, रूस, युगोस्लाविया आदि देशों का भ्रमण। नार्वे, स्वीडन, फ्रांस, जर्मनी, इटली, जिनेवा आदि की यात्रा।

देश-भर की प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं में सैकड़ों रचनाएं प्रकाशित। रचनाओं का अनुवाद अन्य भारतीय भाषाओं में भी हुआ है। विगत तीन वर्षों से साहित्यिक पत्रिका 'युद्धरत आम आदमी' का सम्पादन।

सम्पर्क :

नवलेखन प्रकाशन, मेन रोड, हजारीबाग (बिहार)

इस संग्रह में छब्बीस कवियों की सत्तासी काव्य रचनाएं हैं। जाने-माने कवियों की रचनाओं के साथ एकदम नये कवियों की रचनाओं की ताजगी भी पाठकों को मिलेगी। हमारा प्रयास रहा है कि इन रचनाओं के जरिये सामान्यजन की जिन्दगी और संघर्षशीलता तो उजागर हो ही साथ ही उनके संघर्ष को बल भी मिल सके।

संग्रह में कुछ गीत और गजल भी हैं जिन्हें हमने काव्य की एक विधा के रूप में संग्रहित करने में कोई बुराई नहीं समझी। रेणु की कविता एक दस्तावेज है जो यह सिद्ध करता है कि एक महान गद्यकार के साथ-साथ रेणु एक प्रतिभावान और दृष्टिसम्पन्न कवि भी थे। कविवर केदारनाथ अग्रवाल की कविताएं पूर्व प्रकाशित हैं इनके पुनर्प्रकाशन से किसी भी पुस्तक की गरिमा बढ़ सकती है, इस आदर-भाव के साथ हम इन्हें प्रकाशित कर रहे हैं। जनकवि शील जी ने अपनी कविताएं हमें खुद उपलब्ध कराईं इस हेतु हम अनुगृहीत हैं। रामनरेश पाठक और नचिकेता गीत विधा के महत्वपूर्ण हस्ताक्षर रहे हैं। इनकी रचनाएं निश्चित रूप से महत्वपूर्ण होंगी ऐसा हम मानते हैं। विश्वम्भरनाथ उपाध्याय, कुन्तल कुमार जैन, चन्द्रमोहन प्रधान सहित उन सारे रचनाकारों के प्रति हम आभार प्रकट करते हैं जिन्होंने अपनी रचनाए भेजकर हमें सहयोग दिया।

अन्त में यह, कि यह एक अव्यावसायिक प्रकाशन है और इसमें अगर कुछ खामियां रह गयी हैं तो हमें खेद है।

—सम्पादक

क्रम :—

फणीश्वरनाथ रेणु/८३, शील/२९, केदारनाथ अग्रवाल/५, रामनरेश पाठक/७६, कुन्तल कुमार जैन/१०, विश्वम्भरनाथ उपाध्याय/२७, नचिकेता/४६, चन्द्रमोहन प्रधान/५२, सुरेशचन्द्र शुक्ल/६८, नरेश भदौरिया/९९, राधेलाल बिजघावने/१४, काली किंकर/२०, सतीश श्रोत्रिय/३१, रवीन्द्र उपाध्याय/५६, रामकिशोर मेहता/३९, उमेश्वर दयाल/२२, ललन तिवारी/६०, सिद्धेश्वर/३६, विनय कुमार/२४, राजकुमार सोनी/६५, अनिल कुमार सुनील/२६, प्रियदर्शन/४०, हरीश/६२, महेश कुमार सिंह/६७, रमणिका गुप्ता/८७, प्राणेश कुमार/४२ ।